

रूपरेखा

भारतीय शिया विश्वकोष

पहला भाग

भूमिकीय — भारत में शिया मत का परिचय और विकास

अविभाजित भारत हज़रत अली (अ0) की जाहिरी ख़िलाफ़त के समय में ही शिया मत से परिचित हो चुका था लेकिन आज के भारत में शिया मत तब पहुंचा जब सुलतान महमूद गज़नवी (स0 996—1030) की विजयों की छत्रछाया में या उसके फ़ौरन बाद से आने वाले मुसलमानों खासकर सैयदों ने इस धरती को अपना और अपनी औलाद का निवास स्थान ही नहीं वतन बनाया। खुद महमूद गज़नवी के लिए कहा जाता है कि उसका मूल्य नौशरवान के खानदान से मिलता है। इस तरह उसका रिश्ता नौ इमामों का माताश्री जनाब शहर बानो से हो जाता है जबकि उसके शिया मत से लगाव के बारे में निश्चित रूप से कुछ कहा नहीं जा सकता। सुल्तान महमूद गज़नवी के बहनोई सालार साहू (दाऊद) गाज़ी और भान्जे सालार मसूऊद गाज़ी का एक भाग में राज स्थापित हो गया। यह जनाब मुहम्मद हनफ़िया की सन्तान से अलवी सैयद थे। इसी समय सब्ज़वार से आने वाले नज्मुलमुल्क सैयद नज्मुद्दीन (जायस, नसीराबाद आदि के नक़वी सैयदों के पूर्वज) ने जायस बसाया और कुम, जाजर्म से आने वाले सैयद अब्दुल्लाह ज़रबख़्शा (जैदपूर के रिज़वी सैयदों के पूर्वज) ने जैदपूर बासाया उनकी औलाद क्रमशः जायस और जैदपूर में रही बाद में उनकी शाखाएं देश के विभिन्न हिस्सों में बसती रहीं। उनके बाद से ही सैयदों के आने का तांता बना रहा। इन में किन्तूर के मूसवी सैयदों (नेशापूर मूल के) का नाम उपर है। कुछ सदियों बाद 1320 ई0 में सैयद शरफ़ुद्दीन बुलबुल शाह (काज़मी सैयद) कश्मीर आये। वहां के स्थानीय बौद्ध राजा रियन्जन ने इस्लाम स्वीकार किया। फिर 1323 में एक ईरानी राजकुमार व्यवसायी के रूप में आया और 1372 ई0 मिर्ज़ा शम्सुद्दीन के नाम से शाही का एलान किया और सुलतान खानदान की बुनियाद डाली। सुलतान खानदान के काल में ही अमीरे कबीर सैयद अली हमदानी (*अलमुवद्दतुल कुर्बा* के लेखक) सात सौ सैयदों के साथ कश्मीर आये। इस तरह कश्मीर में शिया मत का स्पष्ट विकास हुआ। इस बीच और इसके पहले व बाद में भी देश के दूसरे क्षेत्रों में सैयद और शिया मुसलमानों के आ बसने का क्रम बना रहा। उनकी गिनती इतनी उल्लेखनीय हो गयी थी कि वे मुस्लिम सुल्तान जिनके शासन का शिलायन्स शिया बैर पर रहा, की आँखों में खटकने लगे थे। फ़ीरोज़ शाह ने अपनी 'फ़तुहात' (विजयों) में लिखा : शिया मज़हब के लोग जिन्हें राफ़ज़ी कहते हैं, ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को सज़ा दी और कुछ को कड़ी चेतावनी और अपमान किया, उनकी किताबें खुले बाज़ार जलवा दी अन्ततः इस गरोह की दुष्टि का पूरी तरह अन्त हो गया।

ऐसी सरकारी हिंसक शत्रुता और जनसंहार के होते हुए भी शिया मज़हब और समाज को किसी भी प्रकार की गिरावट का मुंह देखना नहीं पड़ा। कुछ ही अन्तराल के बाद दकन (दक्षिण) में शिया राज स्थापित हो गये। इनके प्रभाव से शिया मज़हब, ज्ञान, काव्य, साहित्य को विकास मिला। उधर उत्तरी भारत में मुग़ल शासन की स्थापना हुई लेकिन इसके शुरू के चरण में ही हुमायूँ को शेरशाह सूरी के हाथों पराजय का सामना करना पड़ा और देश छोड़ना पड़ा। उसको पुनर्राज्य ईरान के सफ़वी शाह की कुमक का आभारी है। इस पुनर्राज्य ने भारत में महान मुग़ल राज को सुदृढ़ किया। ईरानी कुमक के ही कारण मुग़ल राजकाल में ईरान व इराक़ से शिया उलमा, विद्वान, कलाकार और गणमान्य व्यक्ति के यहाँ आते और बसते रहे। उनको राजकीय पदवियाँ भी मिली यहाँ तक कुछ की पहुँच दरबार तक भी हुई। महान अकबर के 'नवरत्न' में अधिकतर शिया थे। उनके उत्कृष्टता इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है।

इसके बाद भी मुग़ल राज्यपालों और अधिकारियों में शिया उजागर रहे। उन्हीं में बंगाल और अवध के प्रान्त खासकर शिया राज्यपाल उपसम्राट के आधीन रहे। ये बाद में स्वतंत्र राज में बदल गये। यह बात अंग्रेज़ राज्य के स्थापना के समय तक रही। यह भी उल्लेखनीय है कि अंग्रेज़ राज के

नियन्त्रण में आने वाले राज्यों में लगभग दोतिहाई मुसलमानों के थे जिन में दो तिहाई शियों के थे। जिन राज्यों के राज्य अध्यक्ष शिया नहीं थे उनमें अगर सब में नहीं तो अधिकतर में शिया ऊँचे पदों पर आसीन रहे। ध्यान रहे कि मुगल राज के आखिरी काल में अवध की प्रान्तीय सरकार एक शिया राजवंश के अधीन आ गयी जो बाद में स्वतन्त्र राज्य बन गया। इस राज में ही भारत के सर्वप्रथम मुजतहिद (धर्म शोध के विद्वान) हज़रत गुफ़रानमॉब (दे० 1820 ई०) उभरे जिनके ऐतिहासिक लेखन प्रयत्नों, धर्मप्रचार व समाज सुधार के कारनामों ने एक ओर शिया समाज का स्पष्ट सामूहिक स्थान दिया तो दूसरी ओर शिया ज्ञान को अनमिट विकास दिया। शिया ज्ञान की प्रगति में उनकी भूमिका मौलिक और प्रमुख है। आज के भारतीय प्रायद्वीप के सारे शिया उलमा का शैथिक क्रम उन्हीं पर खत्म होता है।

अवध के शिया शासन ने ज्ञान विज्ञान और कला के ऐतिहासिक संरक्षण में अपना नाम अंकित करा लिया। इस सरकारी संरक्षण ने पहले से स्थापित ज्ञान व बुद्धजीवी परम्परा को दृढ़ से दृढ़ करने का अविस्मरणीय काम किया। ऐसे में शिया ज्ञान धरोहर बड़ी ही मूल्यवान और मान योग्य हैं परन्तु यह भी इसका दुखद पहलू है कि अधिकतर ये लेख धरोहर मुद्रित न हो सके। इसका परिणाम साफ़ था, अमुद्रित लेखन असेट का अधिकतर भाग कालान्तर और भुलावे की भेंट हो कर मिट गया।

इस तरह राजनैतिक और शासनिक क्षितिज पर शियों की उज्ज्वलता स्पष्ट रही। राजनैतिक क्षितिज के अलावा सभ्यता और समाजिक क्षितिज पर इस्लामी ज्ञान और दूसरे ज्ञान विज्ञान, कला, काव्य, साहित्य यानी बुद्धजैविकता के लगभग हर विभाग में भारतीय शियों का उल्लेखनीय ऐतिहासिक योग्यदान है। भारत में अब तक ऐसा कोई शोधकार्य जो भारतीय शिया शब्दकोष के रूप में हो नहीं हुआ। अतः इस बड़े और महत्वपूर्ण शोधकार्य का शुभारम्भ इन्शा अल्लाह जल्द ही रहबरे मुअज्ज़म के प्रतिनिधि यानी हुज्जतुल इस्लाम वल मुस्लिमीन आकाई महदी महदवीपूर (मजि) के संरक्षण में हो रहा है। ज़ाहिर है कि यह काम अपने में एक है। इसका कार्यक्षेत्र बहुत विशाल है और यह अत्यन्त गम्भीर प्रयत्न, परिपक्वता, दूरदृष्टि और सूक्ष्म अवलोकन चाहता है। यह किसी एक व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों के दल के बस का नहीं है। इसमें लगभग पूरे समुदाय की हर सम्भव और संगठित सहभागिता की ज़रूरत है। जिसके आधार पर यह कार्य पूरा किया जायेगा।

यह भारत में शिया मज़हब व समाज के बारे में (सचित्र) जानकारीयों का संग्रहित और सार्थक भण्डार होगा जो भारत में शिया समाज और बुद्धजैविकता के विकास का ऐतिहासिक ब्योरा प्रस्तुत करेगा।

दूसरा भाग

व्यक्तत्व गण (शिया उलेमा, मुजतहिदों, ज़ाकिरों, विद्वानों, कवियों, साहित्यकारों, शोधकारों, वैज्ञानिकों, कलाकारों, उद्योगपतियों, शासकों, गणमान व्यक्तियों आदि और दूसरे उल्लेखनीय व्यक्तियों की जीविनियों, और उनके कार्यात्मक, साहित्यिक और रचनात्मक कार्य और लेखन व शोधकार्य।

तीसरा भाग

विभिन्न जीवनक्षेत्रों के संदर्भ से भारतीय शियों के उजागर वैयक्तिक एवं सामूहिक कार्यकलापों का ऐतिहासिक ब्योरा :

शिया कल्चर व विचार धारा खासकर अज़ादारी व उससे सम्बंधित वस्तुओं, मजलिसों, मुक़ासिदों, महफ़िलों, मुसालिमों और शब्बेदारियों आदि के सम्बंध में।

चौथा भाग

शिया सभ्यता के साक्ष्य एवं अवशेष।

शिया मज़हब और कल्चर और व्यक्तियों के विचार व प्रभाव की सार्थक एकीकृत जानकारीयों का कोष।

पांचवा भाग

भारतीय शिया समाज शास्त्र (शिया संगठनों, दलों आदि के बारे में)

शोध व संकलन कार्यदल

संरक्षण :

हुज्जतुल इस्लाम वलमुस्लिमीन आकाई महदी महदवीपूर (दा० जि०)

पर्यवेक्षण :

हुज्जतुल इस्लाम वल मुस्लिमनीन प्रो० डा० सै० अली मुहम्मद, नकवी, अलीगढ़

समन्वय व सम्पादन

(1) सै० मु० र० आ० रिज़वी (2) सै० मु० हु० नकवी 'असीफ़ जायसी'

शोध कार्यदल

- (1) अरबी शोधाधिकारी -2
- (2) फ़ारसी-2
- (3) उर्दू-2
- (4) अंग्रेज़ी.....-1
- (5) कम्प्यूटर कार्यकर्ता ,,-2
- (6) प्रूफ़ रीडर-2
- (7) सूचनात्मक सहायक ,,-2
- (8) कम्प्यूटर डिजाइनर,,,,-1
- (9) आफ़िस अटेन्डेन्ट,,,,-1

इस प्रकार 17 व्यक्तियों का शोधकार्य दल इस प्रोजेक्ट में काम करेगा।